इकाई 8 ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रवाद का उदय

8.4 आदिवासी लोग और ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद

8.5 बहुसंस्कृतिकवाद, हनसनवाद और राष्ट्रीय पहचान

8.6 एक विहंगम दृष्टि

8.7 सारांश

8.8 अभ्यास

8.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

पिछली दो शताब्दियों में विश्व में राष्ट्रवाद (Nationalism) प्रमुख विचारधाराओं में से एक रहा है। फिर भी राष्ट्रवाद को परिभाषित करने में विचारकों में विभिन्न प्रकार के विचार हैं। अठारहवीं शताब्दी की अंतिम चौथाई में अमरीकी और फ्रांसीसी क्रांतियों के बाद राष्ट्रवाद का विचार प्रमुख हो गया जिसमें यह कहा गया कि विश्व स्पष्ट राष्ट्रों के बीच विभाजित है और प्रत्येक राष्ट्र का एक अलग चरित्र है। लेकिन इससे पहले भी ऐसे इतिहासकार रहे हैं जो कि यूनानी, यहूदी, ईरानी, मिश्रवासियों, फ्रांसीसियों और अंग्रेज़ों आदि में राष्ट्र के अस्तित्व की मौजूदगी को मानते थे। लेकिन अधिकांश इतिहासकार राष्ट्र की अवधारणा को एक आधुनिक अवधारणा मानते हैं और राष्ट्र के उदय के लिए विभिन्न प्रकार की व्याख्या देते हैं। अनेक इतिहासकारों का विचार है कि राष्ट्रवाद लोगों के एक समूह या समूहों में राष्ट्रीय भावना या राष्ट्रीय जागरूकता के विकास का परिणाम है और प्रायः उनकी सामान्य संस्कृति और भाषा होती है। ऐसे भी उदाहरण हैं कि जहाँ लोगों में एक राष्ट्रीय पहचान (national identity) की प्रबल भावना के अभाव के बावजूद समाजों में एक राष्ट्रीय जागरूकता विकसित हुई। अनेक उदाहरण ऐसे पाए जाएँगे जहाँ अपने साहित्यिक और कलात्मक कार्यों से बुद्धिजीवियों ने समाज में विभिन्न प्रकार के लोगों के बीच राष्ट्रवाद की भावना को पैदा किया हो। विश्व में राजनीतिक आंदोलनों का इतिहास या राष्ट्रवाद की पहचान पर ज़ोर एक समान विकसित नहीं हुए। संदर्भ और परिस्थितियों पर निर्भर करते हुए राष्ट्रवाद का उदय और उसकी प्रकृति भिन्न-भिन्न देशों में विभिन्न प्रकार की रही है। औपनिवेशिक साम्राज्य के एक समय अंग रहे देशों में भी राष्ट्रीय पहचान की रचना की एक समान प्रक्रिया नहीं रहीं। इसलिए हमारे लिए उस विकास प्रक्रिया को जानना महत्वपूर्ण हो जाता है जिसने ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के उदय में

योगदान दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में ऑस्ट्रेलिया में लोगों ने संघ की स्थापना का निर्णय किसी युद्ध या विजय का परिणाम नहीं था बल्कि यह निर्णय उन्होंने अपनी इच्छा से ही किया था। इसी से ऑस्ट्रेलियाई रा का जन्म हुआ। इस इकाई में आप ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रवाद के उदय और उसके समक्ष मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (historical antecedents) का वर्णन कर सकेंगे;
- ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद में आदिवासियों (Aborigines) के स्थान को समझ सकेंगे; और
- ऑस्ट्रेलियाई बहुसांस्कृतिकवाद (Multiculturalism) के समक्ष चुनौतियों की परिभाषा दे सकेंगे।

8.3 ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रवाद का उदय

सन् 1786 में ब्रिटिश सरकार ने बॉटनी बे (Botany Bay) में एक बंदी उपनिवेश बसाने का फैसला किया। इस फैसले के पीछे कारण यह था कि अंग्रेज़ी जेलों में बंदियों की भीड़ (जगह से अधिक) इकट्ठी हो गई थी। इससे पहले अमरीकी बस्तियों में अंग्रेज़ी बंदियों को भेजा जाता था लेकिन 1776 में अमरीकी स्वतंत्रता के बाद यह संभव नहीं रह गया था। बॉटनी बे तक अपने साम्राज्य के विस्तार के पीछे ब्रिटेन के अन्य साम्राज्यवादी उद्देश्य भी थे। इससे उसे न्यूज़ीलैण्ड तक पहुँचने, एक दक्षिण व्यापारिक चौकी (southern trading post) स्थापित करने तथा फ्रांसीसी औपनिवेशिक विस्तार पर रोक लगाने जैसे लक्ष्य शामिल थे। इस पृष्ठभूमि के साथ-साथ अन्वेषण करने की भावना (spirit of discoveries) और औपनिवेशीकरण (Colonnisation) करने के लिए धार्मिक कारण भी जुड़ गए थे। औपनिवेशिक शक्तियों का यह विचार था कि यह उन्हें ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया कर्त्तव्य था कि वे औपनिवेशिक जनता को ईसाई (Christiane) बनाएँ। इसी समय ऑस्ट्रेलिया के औपनिवेशीकरण की शुरुआत थी जहाँ पर आदिवासियों की काफी बड़ी संख्या रहती थी। शुरू में अपराधी और स्वतंत्र प्रवासी ग्रेट ब्रिटेन तथा आयरलैण्ड से आए। ब्रिटेन ने ऑस्ट्रेलिया को छह पृथक बस्तियों में बाँटा। ये बस्तियाँ थीं – तस्मानिया, पश्चिम ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण ऑस्ट्रेलिया, न्यू साउथ वेल्स, विक्टोरिया और क्वीन्सलैण्ड। सांस्कृतिक तथा अन्य सभी प्रशासनिक मामलों में ऑस्ट्रेलिया के ये उपनिवेश स्वयं को ब्रिटिश परम्पराओं का अंग समझ सकते थे। 1850 के दशक में जब ऑस्ट्रेलियाई उपनिवेशों को आंतरिक स्व-शासन मिला तब इन उपनिवेशों ने ब्रिटिश प्रथाओं और परम्पराओं की सहायता से अपने संविधान का निर्माण किया। लेकिन यह भी सत्य है कि 1850 के दशक से ही ऑस्ट्रेलिया में ब्रिटेन से अलग अपनी पहचान बनाने की भावना फलीभूत (gaining) होने लगी थी। इस प्रक्रिया में सन् 1854 का यूरेका विद्रोह (Eureka Rebellion) एक ऑस्ट्रेलियाई पहचान की ओर एक महत्वपूर्ण मील का एत्थर माना जाता है।

ऑस्ट्रेलिया मोर्चा के सुप्रसिद्ध कवि हेनरी लॉसन (Poet Henry Lawson) ने "यूरेका स्टोकएड" (Eureka Stockade) नामक अपनी साहित्यिक रचना और उसके नायक पीटर लेलर (Peter Lalor) के द्वारा ऑस्ट्रेलियावासियों में राष्ट्रवाद की भावना का जागरण किया गया। सन् 1854 में यूरेका में क्या हुआ? यूरेका विक्टोरिया में सोने की खदान की एक जगह थी। हम जानते हैं कि ऑस्ट्रेलिया में सोने के खजाने होने की ख़बर फैलने से सोने के लिए बड़ी मात्रा में अन्वेषक आए। स्वर्ण खनिकों को लाइसेंस प्रणाली के कारण अनेक अन्यायों का सामना करना पड़ता था। स्वर्ण खनन लाइसेंस की कीमत काफी थी और खनिकों के पास कोई राजनीतिक अधिकार नहीं थे। अपनी शिकायतों के निराकरण के लिए खनिकों ने बल्लारत सुधार लीग (Ballarat Reform League) की स्थापना की। सुधार लीग की मुख्य माँगें थी : स्वर्ण खदानों के प्रबंधन में परिवर्तन, खुदाई और भण्डारी लाइसेंस कर तथा लोकतांत्रिक राजनीतिक सुधार। सन् 1854 के दिसम्बर में खनिकों में दबा हुआ असंतोष पीटर लेलर के नेतृत्व में फूट पड़ा जबकि लाइसेंस तथा अन्य मुद्दों को लेकर खनिकों ने संगठित होकर सरकारी सेना से संघर्ष किया। इस घटना का विवरण देते हुए मार्क ट्वेन (Mark Twain) ने लिखाः

> "बल्लारत खनिकों ने विरोध किया, याचिका दी, शिकायत की, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। सरकार अड़ी रही और कर संग्रह करती रही। और अच्छे तरीकों से नहीं ... धीरे-धीरे परिणाम सामने आया; और मेरा विचार है कि ऑस्ट्रेलियाई इतिहास की यह सबसे सुहानी बात थी। यह एक क्रांति थी – आकार में छोटी लेकिन राजनीतिक तौर पर महान; यह स्वतंत्रता के लिए एक माँग थी, सिद्धान्त के लिए एक संघर्ष था, अन्याय तथा दमन के विरुद्ध वचनबद्धता थी ... यह एक पराजित युद्ध द्वारा विजय का एक और उदाहरण था। इससे इतिहास में एक सम्मानीय पृष्ठ जुड़ता है; जो लोग इसे जानते हैं, वे उससे गर्व करते हैं। वे *यूरेका स्टोकएड* में शहीद होने वाले लोगों की याद बनाए हुए हैं"। (*हिस्ट्रोरिकल स्टडीज : यूरेका सप्लीमेंट*, मेलबार्न यूनिवर्सिटी प्रेस, cited in 1965, www.members.ozemail.com.au में उद्धृत)

यूरेका में खनिकों के विद्रोह को कई लोगों ने खनिकों का न्याय के लिए एक विरोध के रूप में नहीं बल्कि इसे साम्राज्यवादी हस्तक्षेपों के विरोध में और एक ऑस्ट्रेलियाई पहचान के लिए दृढ़तापूर्वक दावा माना है। ऑस्ट्रेलियाई लेबर पार्टी के भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने बेन चीफले यह टिप्पणी की कि "यूरेका एक घटना या आकस्मिक अवस्था से अधिक था। इसका महत्व तानाशाही सत्ता के विरुद्ध थोड़े से समय तक रही क्रांति से कहीं अधिक था। यूरेका का स्थायित्व हमारे विकास पर इस प्रभाव के रूप में था कि अपनी राजनीतिक नियति के स्वयं मालिक होने के दृढ़ संकल्पना की यह पहली वास्तविक अभिव्यक्ति थी (*हिस्ट्रोरिकल स्टडीज : यूरेका सप्लीमेंट*)। खनिक अपने साथ एक नीला और सफेद दक्षिणी क्रास झण्डा (blue and white Southern Cross flag) रखते थे जिसे बाद में एक महत्वपूर्ण सत्ता विरोधी चिह्न के रूप में माना गया। विद्रोह नेता पीटर लेलर इस संघर्ष में एक हाथ खो बैठे थे। बाद में उन्होंने इस संघर्ष का नेतृत्व करना छोड़ दिया। वे विधानसभा के सदस्य और उसके अध्यक्ष चुने गए।

यूरेका विद्रोह की व्याख्या कोई किसी भी प्रकार से करे, इस वास्तविकता को समझना बहुत

आवश्यक है कि यह घटना उपनिवेशियों में ऑस्ट्रेलिया की भूमि और वातावरण से जुड़ी अपनी अलग पहचान बनाने की बढ़ती जागरूकता को अभिव्यक्त करती है। 1850 के दशक की शुरुआत के बाद ऑस्ट्रेलियावासियों के मन में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देने लगा था। ऑस्ट्रेलिया की भूमि में जन्म लेने वाली नई पीढ़ी के पास अपने पूर्वज़ों से विपरीत अनुभव थे। अपनी मातृभूमि से उनके सम्बन्ध कमज़ोर हो गए और नई भूमि की संस्कृति के साथ अपने को ज़्यादा जोड़ा। सन् 1880 के दशक के अंत में ऑस्ट्रेलिया में तीन लाख से ज़्यादा जनसंख्या थी और प्रत्येक तीन में से दो का जन्म ऑस्ट्रेलिया में हुआ था। एक अलग देश के होने और अपनी मातृभूमि (ग्रेट ब्रिटेन) से अलग पहचान की भावना दृढ़ होती जा रही थी। 1870 के दशक में सभी उपनिवेशों में निःशुल्क और लौकिक शिक्षा के विस्तार से यह प्रक्रिया और भी मज़बूत हुई। नवीन ऑस्ट्रेलियाई विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं ने भी दिया। सन् 1880 में स्थापित दी बुलेटिन (The Bulletin) ने अंग्रेजी गवर्नरों तथा शाही परिवार के विरुद्ध लेख छापने शुरू कर दिए। कविता, कहानी तथा कथाओं के माध्यम से इस पत्रिका ने वास्तविक ऑस्ट्रेलियाई भावना को हवा दी। दी बुलेटिन ने ब्रिटेन की महिमागान और साम्राज्यवादी युद्धों में ऑस्ट्रेलियाई सेनाओं को उपयोग का भी विरोध किया। ऑस्ट्रेलियावासियों से अपील की गई कि उन्हें उपनिवेशी अंग्रेज़ के रूप में नहीं बल्कि ऑस्ट्रेलियाई के रूप में विचार और नीतियाँ रखनी चाहिए। जब न्यू साउथ वेल्स प्रेस ने ऑस्ट्रेलिया में ब्रिटिश उपनिवेशीकरण के 100 साल का जश्न मनाया तब दी बुलेटिन ने यह टिप्पणी की कि जश्न का दिन तो 3 दिसम्बर, 1854 होना चाहिए था जबकि "यूरेका में अंग्रेजी बब्बर शेर के समक्ष ऑस्ट्रेलिया ने अपने दाँत दिखाए थे"। ऑस्ट्रेलियाई पहचान की यह तलाश उस समय के ऑस्ट्रेलिया के साहित्य में स्पष्ट तौर पर प्रतिबिम्बित होती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के उदय में झाड़ी (बीहड़) (The Bush) से जुड़ी पौराणिक कथाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। बीहड़ की पहचान एक ऐसे स्थान से की गई थी जोकि कानून और न्यायालय की सीमा से बाहर था। इसे जंगलीपन और कानूनहीन स्थिति के समतुल्य माना गया था। बीहड़ के जंगली डकैतों को यूरेका मोर्चे के खनिकों की भावना का धारक माना गया। वे उपनिवेशवाद विरोधी और देशभक्त माने गए। बीहड़ गाथा (ballad) को प्रथम उल्लेखनीय ऑस्ट्रेलियाई साहित्यिक स्वरूप की मान्यता दी जाती है। आदम लिण्डसे गॉर्डन (Adam Lindsay Gordon) ने पहली बार इस गाथा को एक नया अर्थ दिया। शहर से दूर बीहड़ गाथा शहर को एक व्युत्पादित सभ्यता की बुराइयों का प्रतिनिधि मानते हुए स्थानीय बोलचाल के माध्यम से एक अंतरंग का आदर्शीकरण करता है जोकि सिर्फ ऑस्ट्रेलियाई है। बीहड़ गाथा की रचना शहर में रहने वाले बुद्धिजीवियों ने की जिनका हृदय एक काल्पनिक और रूमानी अंतरंग (romanticised interior) में लगा हुआ था। अधिकांश लोग यह जानते हैं कि ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद की अग्नि प्रज्जवलित करने वाले साहित्यकार हेनरी लॉसन थे। सन् 1867 के यूरेका की घटना के 13 साल बाद उनका जन्म न्यू साउथ वेल्स की स्वर्ण खानों में हुआ था। वे आम आदमी के कवि थे और उन्होंने ऑस्ट्रेलियावासियों द्वारा ऑस्ट्रेलिया पर शासन करने का सपना देखा था। वे चाहते थे कि ऑस्ट्रेलियाई बच्चे दक्षिणी क्रॉस से सजे नीले झण्डे को प्यार करना सीखें। लॉसन के काव्य पर लिखते हुए डेविड

राइट (David Wright) ने यह टिप्पणी की कि "वे एक नए आंदोलन की आवाज़ थे; उनके गीतों में झंकृत और उभरते विद्रोह ने अस्सी तथा नब्बे के दशकों के असंतोष को गुंजायमान किया था"। सन् 1880-1910 से शुरुआत कर लॉसन ने दी बुलेटिन तथा अन्य पत्रिकाओं में सत्ता के अन्यायों के विरुद्ध लिखा और स्वतंत्रता की आवाज़ लगाई। उनकी कविताओं में से निम्न अंश लॉसन की राष्ट्रवादी भावना को प्रतिबिम्बित करते हैं:

"बेकार के लिए ये खनिक नहीं मरे। उनके साथी खुश हो सकते हैं,

क्योंकि आतंक की आवाज़ के ऊपर लोगों की आवाज़ है

जोकि यह कहती है

अपने सड़े गले कानूनों में सुधार करो

खनिकों पर अन्याय खत्म हो

वरना उनके साथ

मेरे सपनों के झण्डे और निशान के लिए

हम सब लड़ने के लिए तैयार रहें (यूरेका)

समय वैसा नहीं है जैसा कि प्रतीत होता है

फिर भी स्वतंत्रता का ज्वार आगे बढ़ रहा है

लोगों की चेतना के साथ सर्वत्र

हम चमकदार झण्डे को ऊँचा उठाएँगे

कभी न गिरने और न ही भूलने के लिए

और यह सिलसिला कई युद्धों के दौरान चलेगा

कभी न गिरने के लिए। (ऑस्ट्रेलिया का *भूला बिसरा झण्डा*) (Australia's Forgotten Flag)

लॉसन और अनेक लोगों के लिए यूरेका से ऑस्ट्रेलिया का विदेशी शासन से स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय का युद्ध शुरू हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में जबकि लॉसन ने अपनी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से ऑस्ट्रेलियावासियों की बढ़ती राष्ट्रभक्ति की भावनाओं को प्रभावित किया और एक स्थानीय ऑस्ट्रेलियाई संस्कृति के संवर्द्धन में योगदान दिया, तब इसी समय सरकार की मौजूदा शोषण प्रणाली के विरुद्ध मज़दूरों की गतिशीलता बढ़ गई। ऑस्ट्रेलिया के इस मज़दूर आन्दोलन के निर्माणात्मक स्तर में 24 वर्ष की आयु में सन् 1885

के आस-पास अपने साप्ताहिक मज़दूर पत्र दी बामरेंग (The Boomerang) के माध्यम से ऑस्ट्रेलिया में आए विलियम लेन ने सामाजिक न्याय तथा राष्ट्रवाद के स्वर उजागर किए। उन्होंने कहा, "हम इस ऑस्ट्रेलिया के लिए हैं, उस राष्ट्रीयता के लिए जोकि अस्तित्व में आने के लिए सरक रही है"। उनकी संगठनात्मक और नेतृत्व क्षमता से क्वीन्सलैण्ड में मज़दूरों को संगठित करने में सहायता मिली और सन् 1890 तक क्वीन्सलैण्ड मज़दूर संगठन आन्दोलन का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। लेकिन उनकी सोच में एक प्रमुख संकीर्णता थी। वे नृजातीय विचार के थे और उनकी चिन्ता केवल श्वेत ऑस्ट्रेलियाई मज़दूरों के बारे में थी, अन्यों के बारे में वे सोचते नहीं थे। यह वर्ग-एकता के सिद्धान्त (principle of class solidarity) के विरुद्ध था। इस सीमितता के बावजूद सामाजिक न्याय के लिए तथा पूँजीवाद के विरुद्ध उनके संघर्ष ने मज़दूरों में राष्ट्रवादी विचार का संचार किया।

अतः उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में ऑस्ट्रेलिया में राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में अनेक घटनाओं के कारण एक पृथक ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय पहचान के स्थापित होने और उसे मज़बूत करने की एक दृढ़ भावना बन गई थी। 1870 के दशक से शिक्षा, संचार, यातायात सेवाएँ तथा छपाई-माध्यम के तीव्र विकास से ऑस्ट्रेलिया के उपनिवेशों में पृथकता की भावना समाप्त हुई। उपनिवेशों को जोड़ने से वित्तीय एकता, समान विधायिका और एक संघ की आवश्यकता का जन्म हुआ। इन सबके परिणाम से सन् 1901 में ऑस्ट्रेलिया में एक संघ का निर्माण हुआ और न्यू साउथ वेल्स, विक्टोरिया, क्वीन्सलैण्ड, दक्षिण ऑस्ट्रेलिया, पश्चिम ऑस्ट्रेलिया तथा तस्मानिया के पूर्व उपनिवेश "कॉमनवेल्थ ऑफ ऑस्ट्रेलिया" के राज्य बन गए। ब्रिटेन का राजा ऑस्ट्रेलिया का राज्याध्यक्ष बना रहा। राजा के प्रतिनिधि के रूप में लॉर्ड होपटोन (Lord Hopetoun) ऑस्ट्रेलिया के नए गवर्नर-जनरल हुए और सर एडमण्ड बर्टन (Sir Edmund Barton) ऑस्ट्रेलिया के प्रथम प्रधानमंत्री बने। संघ ने श्वेत ऑस्ट्रेलिया के अपने प्राथमिक उद्देश्य को अपनाया। जातीय शुद्धता के अनुरक्षण पर आधारित एक ऑस्ट्रेलियाई भावना का अनुशीलन और एक प्रबुद्ध तथा आत्मनिर्भर समुदाय का ऑस्ट्रेलिया में विकास के प्रति निष्ठा व्यक्त की गई। (स्टॉर्ट मेकइन्टायरे : *ए कंसाइज हिस्ट्री ऑफ ऑस्ट्रेलिया*) नवीन संघ द्वारा श्वेत ऑस्ट्रेलियाई नीति के अंगीकरण से ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद की शुरुआत हुई जिसमें आदिवासियों तथा अन्य अप्रवासियों को उनके प्राकृतिक अधिकारों से वंचित किया गया। हम यह देखेंगे कि आगे प्रगति के पथ पर तथा ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय पहचान की दृढ़ता में ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के इस पृथक चरित्र के कारण एक प्रमुख समस्या सामने आई।

8.4 आदिवासी लोग और ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद

ऑस्ट्रेलिया की 2 करोड़ आबादी में आदिवासियों की संख्या लगभग दो प्रतिशत है। उपनिवेशीकरण से पूर्व ऑस्ट्रेलिया में लगभग 600 आदिवासी समूह थे जोकि विभिन्न कबीलों के सदस्य थे। उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया में उन्हें पीछे धकेल दिया गया और वे ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के निर्माण में अपना सही स्थान पाने में असफल रहे। ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के इतिहास को देखकर हम कह सकते हैं कि आदिवासियों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्पराएँ "काल्पनिक" (imagined) ऑस्ट्रेलियाई पहचान के क्षेत्र से बाहर रहीं। बहरहाल हाल के

अध्ययनों से यह पता चलता है कि वैसे तो आदिवासी लोगों को शक्तिहीन स्थितियों में जीने को मजबूर किया गया फिर भी उन्होंने अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलन्द की। एडम शूमेकर (Adam Shoemaker) ने यह विचार व्यक्त किया है कि उन्होंने प्रारंभ के दिनों से ही (लॉर्ड सुडनेय स्टीवर्ड को बिन्नोलोंग (Bennelong) द्वारा 29 अगस्त 1796 में लिखे पत्र से ही) आदिवासी ऑस्ट्रेलियावासियों ने अन्याय को निष्क्रियता से कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने बार-बार इस मुद्दे पर विचार करने पर ज़ोर दिया और दूर'दूर तक उन्होंने इसकी वकालत की तथा इसके लिए संघर्षरत रहे। कई बार यह दृष्टिकोण पूर्णतः व्यक्तिगत रहा। (एडम शूमेकर ("व्हाइट ऑन ब्लैक/ब्लैक ऑन व्हाइट") देखें, ब्रूस बेनेट (Bruce Bennett) तथा जेनिफर स्ट्रास (Jennifer Strauss) (संपादित), *ऑक्सफोर्ड लिटेरेरी हिस्ट्री ऑफ ऑस्ट्रेलिया,* 1998) लैनेट रसल (Lynette Russel) ने 1920 और 1930 के दशकों में एक आदिवासी महिला का अध्ययन किया। उसमें उन्होंने देशीय ऑस्ट्रेलियावासियों के लिए राष्ट्रीय पहचान के विचार की जटिलता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने यह दर्शाया है कि उन्नीसवीं और प्रारंभिक बीसवी शताब्दी में श्वेत ऑस्ट्रेलियावासियों का दृष्टिकोण आदिवासियों के प्रति कैसा था और किस प्रकार से औपनिवेशिक सरकार ने एक अधिनियम के माध्यम से आदिवासी लोगों को व्यापक समुदाय में आत्मसात और शोषित करने का प्रयत्न किया। लेकिन इस प्रक्रिया में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि आदिवासियों को नागरिक कैसे बनाया जाए। यह तो केवल 1940 और 1950 के दशकों में हुआ जबकि यह स्पष्ट हो गया कि आदिवासी लोगों को पूर्णतः समाप्त नहीं किया जा सकता। इसके पश्चात् श्वेत ऑस्ट्रेलियावासियों ने आदिवासियों को नागरिक अधिकार तथा मताधिकार प्रदान करने पर विचार करना शुरू किया। वर्ष 1967 में उन्हें नागरिक के रूप में मान्यता दी गई। शुरू में मज़दूर संगठन कांग्रेस ने ग़ैर-श्वेत प्रवासियों का बहिष्कार किया और मज़दूर संगठनों की सदस्यता भी आदिवासियों को नहीं दी गई। इस सम्बन्ध में मज़दूर संगठन कांग्रेस ने अनेक प्रस्ताव पारित किए। सन् 1948 में जाकर सदस्यता के सम्बन्ध में इस भेदभाव को समाप्त किया गया। वह भी तब जबकि ऑस्ट्रेलिया के साम्यवादी दल ने मज़दूर संगठनों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। प्रथम बार 1965 में मध्यस्थ-निर्णय न्यायालय (Arbitration Court) ने आदिवासियों के लिए समान मज़दूरी का निर्णय लिया। ऑस्ट्रेलिया में व्यापक जनचर्चा का प्रमुख मुद्दा यह है कि ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद की रूपरेखा में आदिवासियों का स्थान क्या है? सन् 1988 में ऑस्ट्रेलिया में यूरोपवासियों के उपनिवेशीकरण का द्विशताब्दी समारोह मनाया गया। आदिवासियों ने इस समारोह की वैधता को चुनौती दी और ऑस्ट्रेलिया के अतीत की अनकही कहानी की ओर लोगों का ध्यान खींचा। वर्षों के प्रयास के बाद आदिवासी लोगों में बढ़ी दृढ़ता के कारण ऑस्ट्रेलियाई सरकार को ऑस्ट्रेलियाई राजनीतिक जीवन में उन्हें उचित स्थान देने के लिए मजबूर किया। वर्ष 1992 में उच्च न्यायालय ने प्रसिद्ध "भूमि शून्य" की नीति को अपने निर्णय में अवैध घोषित किया। "भूमि शून्य" की नीति के अनुसार यूरोपीय ऑस्ट्रेलियावासियों के आने के पहले ऑस्ट्रेलिया में कोई नहीं रहता था। उच्च न्यायालय ने इस विचार को अस्वीकार कर दिया। इस निर्णय ने देशज अधिकार को मान्यता दी जोकि यह सिद्ध करता है कि यूरोपीय लोगों के आने के पहले आदिवासी लोग नागरिक थे और उनके पास अधिकार, उत्तरदायित्व और जिम्मेदारियाँ थी। राष्ट्रीय जाँच पड़ताल, प्रतिवेदन जिसका शीर्षक था "टेरा नूलियस" में यह बतलाया गया कि उन्नीसवीं शताब्दी के

उत्तरार्ध में बड़ी संख्या में आदिवासी बच्चों को उनकी माताओं से अलग किया गया और उनके समूह को "अपहृत पीढ़ी" (Stolen Generation) या चुराई गई पीढी के नाम से जाना जाता है। *'अबओरिजनल वर्कर्स'* (Aboriginal Workers) नामक पुस्तक में एन मेकग्राथ (Ann McGrath) और के सॉनडर्स (Kay Saunders) ने यह टिप्पणी की कि पुस्तक में शामिल निबंधों से "गैर-आदिवासी मज़दूरों को अपने दिल और दिमाग को खोलने की प्रेरणा मिलेगी और वे आदिवासी मज़दूरों के बारे में जान सकेंगे कि आदिवासियों की संस्कृति परम्परागत कार्य व्यवस्था में सीमाएँ ढीली थीं जिसमें परिवार, समुदाय, व्यवसाय, आराम, शिकार और सभा, सभी को प्राथमिकता दी जाती थी और उन्हें अत्यधिक महत्व दिया जाता था। हमारे जैसे समाज में वहाँ वैतनिक कार्य को शीर्ष में रखा जाता है और बच्चों के पालन-पोषण, भूमि तथा पर्यावरण की सेवा, बच्चों और समुदाय की देखभाल और यहाँ तक कलात्मक कार्यों को निम्न श्रेणी का माना जाता है, हम आदिवासियों द्वारा इन सोपानक्रमिकों और सीमाओं को दी गई ऐतिहासिक तौर पर चुनौतियों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। (*अबओरिजनल वर्कर्स*, एन मेकग्राथ और के सॉनडर्स (सम्पादित) ये सभी घटनाएँ इस बात को इंगित करती हैं कि आदिवासियों में अतीत और वर्तमान में अपने साथ हुई यातनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। वे ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय पहचान और इतिहास में अपना उचित अधिकार भी चाहते हैं। आदिवासी तथा ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय पहचान के विचार पर लिखते हुए लायनट्टे रसल ने कहा कि "आदिवासी संस्कृति को राष्ट्रीय कार्यसूची (एजेण्डा) के एक अंग के रूप में न केवल शामिल किया जा रहा है बल्कि वह तो ऑस्ट्रेलियावासियों द्वारा अपने आपको देखने की एक प्रमुख घटक बन गई है। मुझे इस नवीन राष्ट्रवाद को देखकर परेशानी होती है। ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न तत्वों में सामंजस्य करने की मौजूदा इच्छा परम्परागत आदर्शों तथा आंग्ल-ऑस्ट्रेलियाई मूल्यों पर आधारित है; आम तौर पर आदिवासी लोगों की अनदेखी की जाती है अथवा सांकेतिक तौर पर उनका उल्लेख किया जाता है। राष्ट्रीय ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता ने आदिवासी पहचान को अपनाने की आवश्यकता की खोज की है लेकिन ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के पास देशीय ऑस्ट्रेलियावासियों को देने के लिए कुछ नहीं हैं। (एल. रसेल, *पब्लिक रिकॉर्ड्स, प्राइवेट लाइफ : दी स्टोरी ऑफ वन अबओरिजनल वुमेन एंड हर जर्नी फ्रोम नॉन-सिटीजन टू सिटीजन* www.arts.monash.edu.au में उद्धृत)। अतः जिस तरह से ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रवाद की कल्पना हुई और उसका निर्माण हुआ, उससे राष्ट्रवाद के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्र के देशी जड़ों से किस प्रकार समझौता किया जाए।

8.5 बहुसंस्कृतिकवाद, हनसनवाद और राष्ट्रीय पहचान

यह तर्क दिया जाता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध तक ऑस्ट्रेलिया में मुख्यतया एंग्लो-सेक्सन या सेल्टिक (Anglo-Saxon or Celtic) लोगों की संतानें थी। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व के लगभग सभी देशों से विभिन्न जातीय समूह के लोगों ने ऑस्ट्रेलिया में प्रवासन किया। वर्ष 1901 में उपनिवेशों ने मिलकर स्वतंत्र "कॉमनवेल्थ ऑफ ऑस्ट्रेलिया" का निर्माण किया। लेकिन 1950 के दशक के बाद स्थिति एक जैसी नहीं रही। इस संदर्भ में ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद की अवधारणा के निर्माण में अंग्रेज़ीयत के प्रभुत्व को समझना अनिवार्य है। ऑस्ट्रेलियाई

राष्ट्रवाद के प्रारंभिक प्रतिपादकों द्वारा श्वेत ऑस्ट्रेलियाई नीति (White Australia Policy) को अपनाना और इसके पीछे उनकी इच्छा ब्रिटिश नस्ल (British Race) तथा उसकी सांस्कृतिक विरासत (cultural heritage) से अपने आंगिक सम्बन्धों (organic bondage) को सुरक्षित रखने की थी। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ के एक कट्टर ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवादी बिली ह्यूज्स (Billy Hughes) ने निम्न शब्दों में ऑस्ट्रेलिया की अंग्रेज़ीयत पर ज़ोर दिया:

"याद रखें कि साम्राज्य में यह एक अकेला समुदाय है जहाँ पर नस्ल से मिश्रण इतना कम है। क्या आप महसूस करते हैं कि यदि आप इंग्लैण्ड में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाएँ तो आप पाएँगे कि लोगों के उच्चारण में भिन्नता है; यदि आप कुछ मील चले जाएँ तो लोगों की बोलियों में अंतर मिलेगा ... आप पर्थ से सिडनी और होबार्ट (Hobart) से केप योर्क (Cap York) जाएँ तो आपको लोग समान उच्चारण करते हुए समान बोली वाले मिलेंगे। उन्हें आप अलाईस स्प्रिंग्स (Alice Springs), केप यॉर्क, होबॉर्ट और एडेलेड (Adelaide) के साथ बैठा दें तो आप उनमें बातचीत, रूप या आकार में अंतर नहीं कर पाएँगे। हम सब एक नस्ल के हैं और एक ही प्रकार की बोली एक ही ढंग से बोलते हैं .... हम ग्रेट ब्रिटेन के लोगों से ज्यादा ब्रिटिश हैं, और हम दृढ़ता से श्वेत ऑस्ट्रेलिया के सिद्धान्त पर कायम हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हम क्या जानते हैं। (भाषण की शक्ति) (The Power of Speech)।

लेकिन 1960 के दशक में ऑस्ट्रेलियाई संस्कृति और राजनीतिक जीवन की ब्रिटिश नस्ल के साथ पहचान में परिवर्तन होने लगा। 1960 के दशक के बाद केवल अंग्रेज़ियत से ही ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद की परिभाषा में एक मोड़ आया। ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद में आदिवासियों तथा एशियाई लोगों को भी शामिल किया गया जोकि अभी तक "काल्पनिक ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्र" की पौराणिक गाथा से बाहर थे। "1960 के दशक से ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्रियों को इस प्रश्न से अपना बहुत अधिक समय खराब करना पड़ा क्योंकि अब एक समय शक्तिवान ब्रिटिश कहानी प्रासंगिक नहीं है तो समुदाय का कौन सा विचार संभव है या क्या वास्तविक समुदाय ही संभव है अथवा नहीं"।

विशेष तौर पर एशियाई क्षेत्र से बढ़ते आप्रवासन तथा भूमंडलीकरण की समकालीन शक्तियों के संदर्भ में बहुसंस्कृतिवाद तथा हनसनवाद (Hansonism) के मुद्दों ने ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद पर एक नई बहस को जन्म दे दिया है। आरंभ में ऑस्ट्रेलियाई नेता सांस्कृतिक समरूपता तथा संपूर्ण नस्लीय एकता से पूर्ण तौर पर प्रभावित थे। यह श्वेत ऑस्ट्रेलियाई नीति में प्रतिबिम्बित होता था। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय में भौगोलिक-राजनीतिक परिस्थितियों ने ऑस्ट्रेलिया को एशिया के नजदीक आने में मजबूर किया और उसे श्वेत ऑस्ट्रेलियाई नीति पर पुनर्विचार करना पड़ा। राष्ट्र की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रवाद को नए अलंकार की तलाश करनी पड़ी। तब ऑस्ट्रेलिया ने बहुसंस्कृतिवाद की नीति को अपनाया। बहुसंस्कृतिवाद ऑस्ट्रेलिया की सांस्कृतिक और नस्लीय विभिन्नता की व्याख्या करता है। 1970 के दशक में राष्ट्रीय राज्य व्यवस्था के भीतर नस्लीय बहुलवाद की देख-रेख करने के लिए ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद का सबसे पहले उदय हुआ। बहुसंस्कृतिवाद के उदय को विश्व स्तर पर बढ़ते प्रवासन से जोड़ा जाता है जिसके कारण से विश्व के सभी क्षेत्रों में बहुसांस्कृतिक

समाज विकसित हुए। वर्ष 1989 में ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने एक बहुसांस्कृतिक ऑस्ट्रेलिया की नीति की पुष्टि की। ऑस्ट्रेलियाई बहुसांस्कृतिक नीति के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं:

- सभी ऑस्ट्रेलियावासियों में ऑस्ट्रेलिया, उसके हितों तथा उसके भविष्य के प्रति सर्वप्रथम सबसे ऊपर और एकीकृत या सम्मिलित वचनबद्धता होनी चाहिए;
- सभी ऑस्ट्रेलियावासियों के लिए ऑस्ट्रेलियाई समाज की बुनियादी संरचनाओं और सिद्धान्तों से सहमत होना आवश्यक है। ये बुनियादी संरचना और सिद्धान्त निम्नलिखित हैं : संविधान तथा विधि का शासन, सहनशीलता और समानता; संसदीय लोकतंत्र, अभिव्यक्ति एवं धर्म की स्वतंत्रता; राष्ट्रीय भाषा के रूप में अंग्रेज़ी तथा लैंगिक समानता; और
- अपनी स्वयं की संस्कृति तथा विश्वास की अभिव्यक्ति के अधिकार में दूसरों के विचारों और मूल्यों को अभिव्यक्त करने के अधिकार को स्वीकार करने का दोतरफा उत्तरदायित्व शामिल है। (UWS International, www.uws.edu.au/international/ mcultural.html).

अतः ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद की नीति के अंगीकरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि मौजूदा भूमंडलीय वास्तविकताओं के संदर्भ में ऑस्ट्रेलिया ने अपने नागरिकों की वर्तमान विभिन्नता से समझौता करने की कोशिश की है। लेकिन हाल ही में ऑस्ट्रेलिया में पॉलिन हनसन (Pauline Hanson) और "एक राष्ट्र" के विचार का उदय हुआ है जोकि भूमंडलीकरण के कारण देश के भीतर हो रहे परिवर्तनों को ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के लिए एक प्रमुख चुनौती मानता है। पॉलिन हनसन के अनुसार "यह तो मोटी बिल्लियों, नौकरशाहों, तथा अच्छाई करने वालों का संसार था" जिन्होंने आम करदाताओं का फायदा उठाया जोकि "आदिवासियों, बहुसांस्कृतिकवादियों तथा अनेक अल्पसंख्यक समूहों के समर्थन पर" अपना धन खो चुके थे और जिनसे मौजूदा प्रभुत्वशाली वर्ग की "शक्तियों तथा स्थिति" को वित्तीय तौर पर मजबूती मिल रही थी। यही लोग सब बहुसंस्कृतिवाद के उदय के लिए उत्तरदायी थे। (ब्रुस केपफर, "दी ऑस्ट्रेलियन सोसाइटी ऑफ दी स्टेट : इगलटेरियन आइडायोलॉजिज एण्ड न्यू डाइशेसन्स इन एक्सयूजनरी प्रैक्टिसः ब्योरलड बाउण्डरीज : *रिथिंकिंग कल्चर इन दी कांटेस्ट ऑफ इंटरडिसिप्लनरी प्रैक्टिस,* एकडेमिया, सिनिका, ताइपाइ, ताईवान, दिसम्बर 13 - 14, 2003, पृष्ठ 17)। 1960 के दशक से प्रारंभ होकर वर्तमान तक ऑस्ट्रेलियाई सरकार द्वारा अंगीकृत उदारीकरण की नीति ने हंसन और उनके दल के उदय में योगदान किया है।

हनसन ने ऑस्ट्रेलिया में एशिया तथा महत्वपूर्ण से आप्रवासन को और ऑस्ट्रेलियाई लेबर पार्टी की जातीय अल्पसंख्यकों के लिए मान्यता तथा उनको बेहतर अधिकार सुनिश्चित करने के लिए बहुसंस्कृतिवाद की नीति की वकालत को एंग्लो-सेल्टिक प्रभुत्व तथा ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के बुनियादी मूल्यों के प्रति एक चुनौती माना। "एक राष्ट्र" के विचारकों ने लघु व्यावसायिकों और लघु ग्रामीण समुदाय की परेशानियों का भी लाभ उठाया। ये लघु व्यावसायी तथा लघु ग्रामीण समुदाय विनिर्माण उद्योग और सरकारी निगमों के पतन के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना कर रहे थे। ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विचारधारा के इस पुनर्जीवन शक्तिदान के पीछे आदिवासियों, एशिया तथा मध्य पूर्व की पृष्ठभूमि वाले नए आप्रवासियों तथा शरणार्थियों के विरोधी थे। ऑस्ट्रेलिया के इतिहासकार जिओपफेर बलेने 1980 के दशक की बहुसांस्कृतिक

नीतियों के घोर आलोचक हैं जिनकी वजह से मध्य-पूर्व एशिया से व्यापक स्तर पर आप्रवासन हुआ। बलेने को यह डर है कि बहुसांस्कृतिकवाद तथा आदिवासियों के प्रति नीतियों से एक एकीकृत तथा समरसतापूर्ण ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्र के निर्माण में बाधा आएगी। एक राष्ट्र की विचारधारा के प्रतिपादक ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद को मजबूत करने के पक्ष में हैं जोकि एंग्लो-सेल्टिक जनसंख्या पर केन्द्रित है। ब्रुस केपफर्र ने हनसन और उनके "एक राष्ट्र दल" पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि हनसन और उनके अनुगामियों को उन लच्छेदार भाषणों से सीमित चुनावी सफलताएँ मिलीं जिनमें निम्न तथा मध्य आय वाली शहरी और ग्रामीण समुदाय के "बुनियादी मूल्यों" पर ज़ोर दिया। हनसन ने श्वेत और ब्रिटिश पृष्ठभूमि के लोगों तथा उत्तर-औपनिवेशवादी अर्थ में हाल ही में उपजी एंग्लो-सेल्टिक लोगों से एक राष्ट्र विचारधारा की अपील की। एंग्लो-सेल्टिक जातीय अवधारणा अब हितों की एकरूपता पर ज़ोर देती है। उपनिवेशीकरण तथा उत्तर-औपनिवेशिक अवधियों में दोनों में वर्ग, धर्म तथा राष्ट्रीय/राजनीतिक कारणों से तीखी प्रतिद्वंद्विता थी। हनसन और उनका एक राष्ट्र दल एशियाई आप्रवासन, शरणार्थियों के प्रति एक खुली नीति, बहुसंस्कृतिवाद तथा आदिवासियों विशेषकर आदिवासियों के भू-अधिकार के पक्ष में सरकारी नीतियों के खिलाफ था।(ब्रुस केपफर, "दी ऑस्ट्रेलियन सोसाइटी ऑफ दी स्टेट : इगलटेरियन आइडायोलॉजिज एण्ड न्यू डाइशेसन्स इन एक्सयूजनरी प्रैक्टिसः ब्योरलड बाउण्डरीज : रिथिकिंग कल्चर इन दी कांटेस्ट ऑफ इंटरडिसिप्लनरी प्रैक्टिस) अतः ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के संदर्भ में बहुसांस्कृतिकवाद तथा हनसनवाद को समझना आवश्यक है क्योंकि ऑस्ट्रेलिया की बदलती परिस्थितियों में राष्ट्रीयता के प्रश्न ने एक नया अर्थ ग्रहण कर लिया है।

8.6 एक विहंगम दृष्टि

उपर्युक्त वृतांत से हमें पता चलता है कि ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद का उदय एक प्रक्रिया में हुआ जिसकी कुछ विशिष्ट विशेषताएँ हैं। वैसे तो ऑस्ट्रेलिया का लिपिबद्ध इतिहास, यूरोपीय उपनिवेशीकरण से शुरू होता है, आदिवासियों पर हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि ऑस्ट्रेलिया के देशज लोगों की एक समृद्ध संस्कृति है जोकि यूरोपीय लोगों के बसने से काफी पुरानी है। विभिन्न बस्तियों ने स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य के रूप में उदय होने के लिए अलग-अलग तरीकों को चुना गया। जहाँ तक ऑस्ट्रेलिया का सवाल है, ऑस्ट्रेलिया में बसने वाले उपनिवेशी शुरू में अधिकांशतया ब्रिटेन से आए थे जिन्होंने धीरे-धीरे ऑस्ट्रेलिया से अपने सूत्र विकसित किए। लेकिन इस प्रक्रिया में वे ब्रिटेन से अपने सांस्कृतिक सम्बन्धों को कभी नहीं भूले। विभिन्न बस्तियों में फैले हुए, वे अपने मातृदेश से नस्ल, धर्म और भाषा के माध्यम से जुड़े रहे। लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने अपनी नई भूमि के साथ जुड़ाव विकसित किया और उनमें अपने मातृदेश की पहचान से अलग अपनी पहचान की भावना विकसित हुई। इस नई पहचान की तलाश के पीछे अनेक कारण थे जिनकी हमने राष्ट्रवाद के उदय की व्याख्या की है। ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय पहचान के निर्माण के प्रयत्नों में मातृदेश से कोई विरोध नहीं हुआ। इस तरह से सन् 1901 से ऑस्ट्रेलिया के छः उपनिवेश "कॉमनवेल्थ ऑफ ऑस्ट्रेलिया" बनाने के उद्देश्य से इकट्ठे हुए। इस तरह से संयुक्त अंग्रेज़ियत तथा संयुक्त ऑस्ट्रेलियाईपन के कारण

ऑस्ट्रेलिया में संघीय शासन की स्थापना हुई। ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के निर्माण की यह कहानी अन्य देशों के राष्ट्रवाद के निर्माण से अलग है। जिस तरह से ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रवाद की संकल्पना हुई और जिस तरह से उसका निर्माण हुआ, उसमें आरंभ से ही असंतोष के लिए पूरा स्थान था। मातृदेश से अपने बंधनों को तोड़कर और अपनी पहचान पर दृढ़ होकर, श्वेत प्रवासी अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाने में सफल हुए। लेकिन देशज लोगों को इस राष्ट्र-निर्माण परियोजना से पूरी तरह से बाहर रखकर ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद के निर्माता भविष्य में आने वाली चुनौतियों को देख नहीं पाए। आरंभ से ही नए राष्ट्र की कल्पना में नस्लीय तत्व उसको कमज़ोर करता था। इस पर लिखते हुए स्टुअर्ट मेकिनटायर ने टिप्पणी की कि अपने नए घर में उपनिवेशियों ने जितना ही जुड़ने की कोशिश, वे उससे यहाँ पर सबसे पहले आने वाले लोगों (आदिवासियों) से जुड़ नहीं पाए और क्षेत्र के अन्य लोगों के साथ भी सम्मिलित नहीं होना चाहते थे। बीसवीं शताब्दी के पहले आधे दशकों में उन्होंने विदेशी और आंतरिक नीति के लगभग सभी अंगों में एकमात्र स्वामित्व पर ज़ोर दिया जिससे उनमें असुरक्षा की भावना जागी। उन्होंने अपने आपको अलग, अकेला और अनावृत्त पाया। ऑस्ट्रेलिया के एक इण्डोनेशियाई पत्रकार ने ऑस्ट्रेलिया की विरासत को "एशिया के श्वेत कबीले" के रूप में उल्लेख किया है। लेकिन अपनी भूमि में अपने उचित स्थान प्राप्ति हेतु आदिवासियों की बढ़ती दृढ़ता और ऑस्ट्रेलिया में एशिया क्षेत्र से भारी संख्या में लोगों के आप्रवासन से समकालीन ऑस्ट्रेलिया में नस्लीय विभिन्नता की अनदेखी करना असंभव हो गया है। बहुसंस्कृतिवाद और सामंजस्य की नीति द्वारा ऑस्ट्रेलियाई गणतंत्र नस्लीय विभिन्नता के मुद्दे का समाधान करने का प्रयत्न कर रहा है। लेकिन हनसन घटनाचक्र ने इस प्रयत्न के समक्ष अनेक चुनौतियाँ प्रस्तुत कर दी हैं।

8.7 सारांश

इस इकाई में हमने ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रवाद के उदय की पृष्ठभूमि और ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय पहचान की प्रकृति से जुड़े मुद्दों की व्याख्या की है। अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाने के लिए प्रत्येक राज्य को भिन्न प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ा है। ऑस्ट्रेलिया के मामले में आप देख चुके हैं कि ऑस्ट्रेलिया में अठारहवीं शताब्दी के अंत में मुख्य तौर पर ब्रिटिश उपनिवेशियों ने नियंत्रण स्थापित करके स्थानीय जनता को हाशिए पर ढकेल दिया था। इन उपनिवेशियों ने कालान्तर में नई भूमि के साथ जुड़ाव विकसित किया और विभिन्न साधनों के माध्यम से मातृभूमि से अलग अपनी एक पहचान विकसित की। इसकी परिणिति सन् 1901 में ऑस्ट्रेलियाई कॉमनवेल्थ के संघ के निर्माण के रूप में हुई। राष्ट्रीय पहचान की इस रचना में देशज ऑस्ट्रेलियावासियों को जिन्हें उपनिवेशियों द्वारा आदिवासियों के रूप में वर्गीकृत किया गया, को राजनीतिक मुख्यधारा से अलग रखा गया। लेकिन इससे आदिवासी शान्त नहीं रह सकते थे। वे अब अपनी जमीन पर सीमान्त किए जाने पर आवश्यक तौर पर प्रश्न उठा रहे हैं। एशिया से आने वाले प्रवासियों ने ऑस्ट्रेलिया के विकास में योगदान किया है और उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्र-राज्य में अपने उचित स्थान की माँग की है। ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्र-राज्य के समक्ष चुनौती यह है कि आदिवासियों तथा एशियाई आप्रवासियों के दावों के साथ कैसे सामंजस्य स्थापित किया जाए और उन्हें समान अधिकार और आदर के साथ कैसे स्वीकार किया जाए।

8.8 अभ्यास

1) ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रवाद का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

2) ऑस्ट्रेलिया में आदिवासी लोगों के राष्ट्रवाद को स्पष्ट कीजिए।

3) ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद तथा राष्ट्रीय पहचान की महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

8.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

स्टीफन एलोमस एवं कैथरीन जोन (संपा.) *ऑस्ट्रेलियन नेशनलिज़्म : ए डाक्यूमेंटरी हिस्ट्री,* 1991

डब्ल्यू. जी. मैकमिन, *नेशनलिज़्म एंड फेडरलिज़्म इन ऑस्ट्रेलिया,* 1994

रिचर्ड व्हाइट, *इंवेटिंग ऑस्ट्रेलिया : इमैजेस एंड आइडेंटिटी,* 1688-1980

स्टॉर्ट मेकइन्टायरे : *ए कंसाइज हिस्ट्री ऑफ ऑस्ट्रेलिया।*

ब्रुस बेनिट एवं जेनफिर स्ट्रास (सपा.), *दि ऑक्सफोर्ड लिटेरेरी हिस्ट्री ऑफ ऑस्ट्रेलिया,* 1998।

आर. एम. यंगर, *ऑस्ट्रेलिया एंड दी ऑस्ट्रेलियन्स : ए न्यू कंसाइज हिस्ट्री,* 1970।